

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यः श्रद्धावान्
कुरुते ॥
इ ॥

(M)



वनामवायः हवाकृष्णः नायाकृष्णः कृष्णवायाव ॥
जाययाय ॥ वृजायाय वानमनु ॥ अकर्ममनु ॥ ० ॥
हृषीकेशकृष्ण ॥ अजयगणः धवहिः धमनुवायः ल
खधकलसधयवने ॥ कयानधवनः अजयगणे ॥ य
वावाहनवृजायाय ॥ लक्ष्मिद्विदवदानखने ॥ क्रिथं
लिविथं वृजायाय ॥ धृतिनिविहः इमियुधत्व ॥ ॥ धव
हिः गमः वायः अकर्मसिः वानः इष्टीयेकः अमुनीरु ॥

गकृष्णनामवायः धमनुनजाययय ॥ १००० ॥ क्रिथंय
जायायः धवः हीवः नायः वृकृष्णः वानमनाथ ॥ अकृष्ण
नायुधकमनु ॥ ॥ अकर्ममनु ॥ अकर्ममनु ॥ अकर्ममनु ॥
विष्णुदयशनागनागुक्तनेवायः लक्ष्मिद्विदवदानखने ॥
धमनुनविग अकर्मनयानया ॥ ॥ अकर्ममनु ॥ ॥ अकर्ममनु ॥
हं हं हं ॥ अकर्ममनु ॥ अकर्ममनु ॥ अकर्ममनु ॥
दवदं हं ॥ अकर्ममनु ॥ अकर्ममनु ॥ अकर्ममनु ॥

नृपस। अतः मित्रमयं। कुजयशसवाय॥ हाकुकानवय॥
ऊयवयः किमल॥ सगुयादात्रमडंगव। मसस्तिनसडं॥
इसकुमानसियुनिधय॥ ० ॥ कलयसः मलवायः वात्र
तिथेवहिः अतः नः वाय॥ इंदईदवदईदू॥ इईयूजाविधि।
विगः सानः वलि। यादूजजमकानः अत्रनयानविशंक
असकलनागकात्रयः नागदधधुदतं॥ इइनः हायः जाय
याय १०००॥ यादयादाइसीताथः नागकाइत्रहिः रिगन

नगकुमाय॥ इंदनरसकुमालयइईरुट॥ ७७ ॥ मिक्का
सः हाऊगुलिहायकं ऊयय॥ धात्रा॥ १०००॥ एगुयालूखास
ताथ॥ हाइनहासियरुव॥ ७८ ॥ इनरखरखाहिइरु
नरएगुईरुट॥ धमनु॥ ७९ ॥ खयलसिः वृजगुनिहा
यकं॥ जाययाय॥ १०००॥ सगुयाखइकासताथ॥ खनान
सियूखा॥ डायूनुइनरगिदूरमालयइएगुसनीरयविशु
इईइकईरुटसाहा॥ याकासमनु॥ ८० ॥ खनकनवसि

॥ शुभं गुलि हावर्क ॥ इत्यथ १००० ॥ एतद्वासा इवा समा ॥
गायमनुध ॥ उ विमान काम ॥ ई ई ई ई ई ॥ ई ई ई ई ई
हा ॥ ॐ ॥ गृह्या वास ॥ आना श्री गत्र सेरु नायुव ॥ ॐ ॥
मनुध ॥ हनर सु सु य र य र न र न र ई ई ई ई ई ॥ ॐ ॥
हनथन सि खर्ज गुनि हायर्क जाय या य १००० ई ई वा के ॥
खड्वा समा ॥ ननान स सु ड ना युव ॥ उ ख ड्वा न न र ई
ई ई ॥ ॥ मनधि हाज गुनि हायर्क जाय या य ॥ द्विया

या खड्वा स गाथु ल हाथन या गाथु ॥ हन र हा
थ व द र ह स व र या थ व र ई ई ई ई ई ॥ ॐ ॥ कल ल
ह स व र गुनि हायर्क इत्यथ धा न १००० ॥ हन हन समा ॥
क व र ह न वा न हाथ न हन ॥ ॐ ॥ मनु ई स सु ई ई ई ई ई ॥
इधन हान या सि र स गुनि हायर्क जाय या य धा न
न १००० ॥ मनु ई ई ई ई ई ई ई ॥ य स न स व वा समा ॥
य स न स निव सा हागा य ॥ ॐ ॥ उ ड ड क हाथन

॥ हृदयवदहं ॥ खमसिनके ॥ कुदवदहं ॥ शुमानके ॥
आदवदहं ॥ काय ॥ मवीदवदहं वीसुं ॥ उं चोगनमनु ॥
इंदवदहं ॥ नोनधुनमनु ॥ ॥ कोंदवदहं ॥
॥ लंगधुनमनु ॥ ॥ कंदवदहं ॥ नकुधुन ॥ ॥
कुदवदहं ॥ विसावधुनमनु ॥ ॥ मुंदवदहं ॥
आकासचालिसिद्धिमनु ॥ कुंदवदहं ॥ कायद्वय

के ॥ मयवदहं ॥ गुणिकासिद्धिमनु ॥ ॥ हीदवद
हं ॥ अरुनसिद्धि ॥ ॥ कोंदवदहं ॥ कलान
कवोदारइंदवदहं ॥ कधकवागमनु ॥ कुंदवद
हं ॥ विनायधुनमनु ॥ उं कुरुणानिल्याय ॥ कधकवा
कायमनु ॥ सिजल, ल, सुवर्णमादि ॥ धनयत्रयत्रसा ॥
वासुयमनु ॥ यथसः शरीरत्रसाः साकनयाइइमद

यू॥ ॥ कृष्णान्याकमनसा, रुद्राष्टाय ॥ ॥ गृह्यामि
मृगत्तः नीयावः धवमिवासावातः सूनाक्षः, उडासद्वय ॥
सकाश्याः गृह्यामि ॥ गृह्यामि ॥ द्वासागानः सा
कूर्नेड्यानयानः गाकवदयनकृद्दिधयक ॥ धमन
नगृह्यामि ॥ रुद्राष्टाय ॥ उडासद्वय ॥ ॥
हाकृल्लियाहि ॥ कर्कश्याः साययोनः मर्कश्यायकः ॥

जनरुय ॥ धागृह्यामि ॥ मर्कश्यायकः ॥
याग ॥ ॥ उल्लियाः साययोनः विद्यायुत्रि ॥ ॥ गानद्वयः
काश्याः दाकः उल्लियाः मिश्रतः धमाष्टादनगृह्यामि ॥
धवंगृह्यामि ॥ मिवासावातः मिश्रतः मर्कश्यायकः ॥ ॥ सकाश्याः
याः मात्रः धागृह्यामि ॥ उडासद्वयः ययः धयकाः वायुः सस
नदावः धागृह्यामि ॥ उडासद्वयः काश्याः दावः गल्लिनः

न्या
स

ॐ वः स्वावः महिष्ठुता ॥ ० ॥ ॐ नमः विष्णु डिङ्क जालं ३ द्वाला
मूखि लों ३ ऊँ हूँ रु ॥ धममनः शैत्रवयूयाय ॥ ॥ ॐ नवया
वलि विषयः यवा वा हात्र मूजायाय ॥ धमया हा विद्या सिधयक ॥
यथु डि सिद्धि रुय ॥ न्यास यायः ॐ वि घूं ऊँ हूँ स्वाहा ॥ नूगत्र
स ॥ जानामू विस्वाहा ॥ मित्र सि ॥ हौं जौं ऊँ हूँ स्वाहा ॥ मित्रास ॥
ॐ हूँ हूँ स्वाहा ॥ वात्रस ॥ ॐ हूँ हूँ रुट् स्वाहा ॥ यमयात्रस ॥ धनि न्या

स या हा वः सिधयक जिय ॥ ० ॥ हौं हूँ स्वाहा ॥ कवय याय ॥
ॐ हूँ हूँ स्वाहा ॥ कयात्रस ॥ ॐ हूँ हूँ रुट् स्वाहा ॥ वयु दयक ॥ धनि
न्यास ॥ यथमसमन जायः १०८ माननः गादनः ॥ कयात्रस ॥
धनिकर्म मया स्थि सिद्धि मया ॥ ॥ सत्र कात्रसः ॥ समस्त
धन यायः वृजा याय ॥ ॥ ॥ सिमत्र कात्रसः यात्रिकर्म या
य ॥ ॥ वसन्त कात्रस ॥ सुद्धियाय तिन के वान्य ॥ विह्वेता

मि. व. अ. उ. अ. यि. या. नि. कं ॥ महायज्ञकृतसद्धः माहायज्ञि
समूहवः सत्वरं सर्वसंयुक्तं यनिगृह्णामि सर्वतः ॥ यज्ञाकर्मा
यथासक्याः महाकर्माकृता यत्नः ॥ उ. या. द. या. मि. ता. य. थ. वाँ. चि. थि
हमनरुहेन । गृहीत्वा सर्वं त्वनं यज्ञं सर्वसत्वाथकात्रणम् । अ
तीर्णं तात्रयिष्यामि अमृतामाययाम् ॥ अनास्वकानाः स्वा
सयिष्यामि सत्त्वानस्वायनयिष्यामि. मि. नि. नि. ह. नि. नि. ह. ॥ न. न. स.

माधिमूढाववस्तुनासागदद्विस्तुददिकुवालगतस्मिमतिलः
नत्रिनयदुनामकं। सर्वलोकाधायुवः त्रिनातासियाकनं। वि
जमकावलावविराव॥ ॐ स्वरावगुह्यः स्वरावगुह्यः ॥
सर्वधर्मनसमधिमूढागं। गताधर्मकायनिष्ठादीकन
धर्मसंभूगकायमूढादयिउ॥ स्वरावगुह्यः स्वरावगुह्यः
स्वयिदवति लिखायमानरावनः ॥ ४ वज्रसहस्रवगा

न। सिद्धिमहर्दूहर्दूकात्रनाथसमयामहं। नमिह॥ व
॥ ४ वज्रसहस्रवगा गगधवदधनू॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥
नमकसूत्रियनहं॥ ॥ ४ वज्रसहस्रवगा गगधवदधनू॥
॥ ४ वज्रसहस्रवगा गगधवदधनू॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥
यूतुलउमलुलकावयन॥ ४ वज्रसहस्रवगा गगधवदधनू॥
कागसूत्रियनहं॥ ४ वज्रसहस्रवगा गगधवदधनू॥

सुखाईं ॥ गगन ४ सुनवदप्रसा निव्यनः सर्वतथगतविग्रह ॥
निष्ठास्यसर्वत्राकाधसंकलवृत्तवायूतः ४ ॥ सहननन
वयवस्य अहंकार कृतमात ॥ उँवर्कमात्र ईहाः सर्वत्रकाम
पूर्वतयादि ॥ उँडरुवाछ ॥ आ १ ईसाहाधवमाहामूडाया
वन्निम ॥ चिकयन ॥ उँथागमुद्धा ॥ सर्वधमाथागमुद्धाईं ॥ व
कसूनात्रयनई ॥ उँसमयाईं ॥ ईईसमयसमस्थिति सुसमा ॥

आ १ ईईईकामूद्धस ॥ धर्मकर्मसमयमूडाकृता अविष
कमावर्क ॥ जिह्वायमदल चन्द्रधूमताधर्मसूत्रयत्र ॥ धर्म
त्रमूडा ॥ हृदयवदुविषयवज ॥ उँकृसाहा ॥ उँआ १ आकर्ममूडा ॥
डाहृदियसूत्रिकसूर्यवदुवजधूमतामहाकात्र ॥ उँअस्वा
हा ॥ उँतिरुसाहा ॥ आ १ साहामहामूडा ॥ अविष्ठाक ॥ यथा
दि ॥ गगनव्यादिव

यथरा अन्नदीप्तनव ॥ अन्नसमविस्तरं सुखं विनासनय ॥
रावा राव विस्तरं मिमम विज्ञानि जू ॥ रुजिन अन्न कन सर्व
ससतिन विज्ञय ॥ दादा त्रिगव यः दस विना व जिज्ञय ॥ स
हसा नृणां भाव विवर्जितं सर्वसर्वज्ञं सिमन्त विन विज्ञय ।
वज्रं हंसं सा विज्ञय कजधर्म विभां हि ज्ञय ॥ नम हंसं सा त्रधर्म
जायिनि भां हि ज्ञय ॥ नमः शुभा गाधियम त्वा मायक ॥ एकदृ

कसमस्वानवाः यवतर्कं तत्र गृह्यं मावा सयथ कुरु न्यागा
प्रविष्टं (गमनं) । रुजिनं स्तुत गमं रुम्याः मार्तगात्र विष्टं यट् ॥ रु
षुत्रुडम रुत्रुडेव रु ससाधिग । यश्च गकिनी मरुग त्व सर्वकर्मो
नूसाधक ॥ यागम उल्लम रुताणाः वज्रं ध्वनि युक्तं रुथ ॥ गथ
गतम रुका कायः त्रिन रुत यागः रुक्षिका ॥ रुद्र व रुध्वनी गृह्य ॥
क रुत सर्वका सवृका ॥ ॥ रुक क रुद्रतः ववत नानः त्वत्तत्वा

ली०

हिनरघघघानयः सर्वसत्ता जमूकस्य सानिकनू यविक
नृ० वल्लकनू वृत्तल्लकनू ४ ईं रुट्टाहा ॥ ॥ उदतनमावडा
गसर्वननाजाय । गधमगगाया रुकं सन्यमावनूला यव ॥
धमलुनः खजय यावतसनेः क्रियाऊनदासानः मध्याव ॥ रु
ना ॥ मिकसवृद्धाय नथमसुसध्वरुहगडूमेतियथानि ५ विल्ल
ध्वरुवत्रकम्मानायः विमलुद्धावति ॥ मवाधूयागधनस्वाहा ॥

उं कृगमाकनयामनिश्महामृतियेस्वाहा ॥ ॥ चालसरुधि
मूलायके यानूम सर्वइरातियनिस्वध ॥ रुना ॥ उं वडयालाय
कसनाययः जूत्रनूकनू रस्वाहा ॥ ॥ उं धिमिरधिमिदायस्वा
हा ॥ धात्र ३ कालायमकु ॥ ॥ उं स्वस्वाहा ॥ धमलुनद्याल
याः यधनमदयक ॥ धात्रन ॥ ॥ उं आदित्यत्रयवान् वा
सूयवावलनगनूठयकलीयार्गेनः रुमामिध्वस्वाहा ॥ ० ॥

धमकुनः तत्रस्यथ्माथ्मायः धाल २ जययः ॥ लथ्मायमकु ॥ ॥
सिन्धुवागम्यगः लिख यमगेवः लथ्मायविद्या ॥ ३ ॥ उंन
माडवाच ॥ कालिकालिमाहा कालिः कालिकत्रयदकालिका
लिर्ककालियमदमसियदत्रदियात्रः तामूकथनिस्त्रि
कः जायमालिहूलासागाग्राहगावकुलि ॥ गूदगजययः धा
त्र १ ॥ वद्विन्नथमकुय ॥ ७ ॥ ॥ उंनमहाशिवाय ॥ उं

त्रकजस्यत्रखारुगलकमागधत्रणीः यादुवगत्रदनिद
तिस्त्राहा ॥ धात्र ६ ॥ मुथकायालखिजययावगानः ॥ ३ ॥ सगू
रुजन ॥ ॥ उंनमागुनूग्राह ॥ सत्रस्यमहाविद्याः त्रकवर्तिक
गुकापालिगसामयिद्विगुवाहानिखायस्यामायिवाधानग्रा
वयिमायिसिद्धिगुनूग्राह ॥ धाल १ ॥ ययः गालः मसाः जाय
याहावनकयक ॥ तगाउसः स्वधनजययः गायकः मियायाना

मन्त्रिधनः माधुजययनकः वरसाध ॥ ७ ॥ ग्रावति
वसुग्ननृनिषावजाकथनविननिनकनृनिजाव ॥ इइयाग्नय
दववयामनु ॥ धान १ वृविद्याः धानगात्र ॥ ७ ॥ डंसासिर्ष
डयग्ननृमूखाम्बर्गः केवो धानामसुग्राह ॥ धान ८ ॥ सिधनज
यनयः मिसाया नामन्त्रिधनवः डसमनु ॥ डं वसनवधविन
वधदयवधसिद्धिगुनूग्राह ॥ नममिति सुग्राह्याः नाम

धिधनः जययः धान ३ ॥ दू सयजिधाविनवा लनकवस ॥ डंसा
नसारमहि सारमाननिय ०० ॥ धान ३ लखजययः गानक ॥
सानदयमरुयाः सानदयकमनु ॥ एह सर्वसिद्धिमनियवयि
हार्हृरुट् ०० ॥ धान १ लखजययगानकः धनववयाः धनव
वयः रिह ॥ डं वरुनदया हाजवल सगावतः सधरु लदास्य
रुयलाजा वसजा समा हनिध ॥ डं रुत्रा रुनी किरेना मूखावा

घनः ननु हं मुखं हं वायिः ता म्हाहिना मा माहि युजा माहि व
ह न वं सु धान स न्द माहि ना म रुत्र हि ना म मा सिद्धि गु वृ ग
ह्ना ॥ धन ८ ॥ स्त्रानः विगः सिन्धुः जय त्रयः कृ य रा म क मा ह नी ॥
ॐ धि मि धि मा धि मि द्वा य स्वाहा ॥ ॥ धम कुनः का ला य म कु
यू य न्ता उ दा म कु ॥ ॥ ॐ स्व स्व स्व स्वाहा ॥ धम कुन द्या न स ली वा
न यान कः द्या ल य ध न म द य क ॥ न नार्त ला य क ॥ ७ ॥ ॐ ऊँ इ

अत्र कृती स्वाहा ॥ का ला य ती म कु ॥ ग द सि वि सा वि नि र स्वा
हा ॥ वि सा वि म कु ॥ ॐ ऊँ स स्वाहा ॥ मृ त्यु इ य म कु ॥ ॥ ऊँ उ व
न ध्व ती म कु ॥ ॐ ऊँ व न्दि द वि ता रि टी २ मा व वि रू क टी २
म म जी य व न्द स्वाहा ॥ व न्दी म कु ऊँ श्री म ४ ॥ सूर्यो म कु ॥ ऊँ
ऊँ ई ॥ ह स्या ॥ सूर्यो य म कु सूर्यो म कु ॥ ॐ ऊँ ऊँ ऊँ ॥ वा दा म
कु ॥ ॐ वी म वा न ती वि स ना स नी ॐ ग रु ॥ व ज ग रु ॥ स्वाहा ॥

नयहंवातविहं (सू) व्यासत्रियागसर्वयां हिनश्यथामर
रुनरुदेष्टा. जूगायतंतिस्वाहा॥ वदयहनव
यहननः जातवस्यंकाकायथागावकाः थ
त्रा. वलिथययंगः लस्यायमालः वाकोंथंः
नियंयुंजांयांयमानः क्रमजागनयंयान्यः थनः
मोयाः क्रिथंटेयागवकायः थमक्रिथंययः

थमनतायं ॥ वायुनिमयदुस्यतिमयलदा
शत्रुंवायः थुनि॥ नकिवत॥ उंरुंदद्विकलि
ः सिविकेलाः मयध्वनः नाशनः वरुणयतया
॥ थमननः रिक्थिथंनकैः काकवानमम्वानक॥
तांउरकमाप्रियवर्गः मयिर्वयः वरुणरुहाइं॥
थननहिद्वियमनु॥ उंयवर्तनमूनिथागुन

महर्षेः सचरत्नानि यासन्त हर्षे ॥ धन ॥ उच्यते ॥ यस्य यास
क ॥ ॥ ॐ विष्णवे नमः सर्वविषयानां निहंरुदृष्टा ह ॥ ॐ
सर्वविषयानां ॥ ॐ कियस्वा ह ॥ धन ॥ ॥ यस्य यासन्त ॥ ॐ

यीडा यीडां ग. का हान उद्यानः इति जिज्ञासा ॥ स्वर्ग
यावः लिखिताः निपातन नम्रयवात्र यायः मरुत कनरुना ॥
मूला इत्यत्रिका यायः नमना या अगुडा जिता यासम

यिक यासहिता ॥ ॐ ॥ मालयागसाः सकनताडः ना
॥ ॐ रुद्रभाके रुद्रभा ॥ हिमः सन्धुः का कल्लरुसः
नका ॥ अक इव नसिकभावाः नतानवायकी ॥ मामरु
॥ ॐ ॥ विमवावयाः रुद्रक सत्रातिः तानकनाय
रुद्रुद्रुद्रा ह ॥ धमनु ग्रासवासाः न
क ॥ हि ॥ ॐ ॐ नयस्वा नयता